

विचार बिन्दु

अवसर तो सभी को ज़िंदगी में मिलते हैं किंतु उनका सही वक्त पर सही तरीके से इस्तेमाल कितने कर पाते हैं? –संतोष गोयल

स्मार्टफोन का उपयोग : बच्चों के मानसिक विकास पर विपरीत प्रभाव

स्मार्टफोन क्रांति ने जहां प्रगति और विकास के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किये हैं वहां इसके दुष्परिणामों से भी दो-दो हाथ करने पड़ रहे हैं। विशेषकर पढ़ने वाले बच्चे स्मार्टफोन लवर हो गए हैं। दुनियाभर में स्मार्टफोन के बच्चों पर पड़ रहे दुष्प्रभावों पर बहस तेज हो रही है। भारत की बात करें तो 10 से 14 वर्ष की आयु सीमा के 83 प्रतिशत बच्चे स्मार्टफोन का उपयोग कर रहे हैं। कोरोना के बाद यह संख्या तेजी से बढ़ी है। एक अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक यह वैश्विक औसत 76 प्रतिशत से 7 प्रतिशत अधिक है। बच्चों के बहुतायत से स्मार्टफोन के उपयोग पर कई देशों ने रोक लगा दी है। कई देशों की स्कूलों में भी प्रतिबंद लगाए गए हैं। बताया जाता है स्मार्टफोन के उपयोग से बच्चों में 150 प्रतिशत तनाव बढ़ने का खुलासा हुआ है।

चाइल्ड राइट की टॉप संस्था नेशनल कमीशन फॉर प्रोटेक्शन फॉर चाइल्ड राइट की रिपोर्ट से एक चौकाने वाला खुलासा हुआ है कि करीब 10.1 फीसदी बच्चे ही स्मार्टफोन के इस्तेमाल से ऑनलाइन पढ़ाई करते हैं। बाकी 59.2 फीसदी बच्चे स्मार्टफोन का इस्तेमाल ऑनलाइन चैटिंग और अन्य कामों में इस्तेमाल करते हैं। मतलब हर 7 में से 6 बच्चे स्मार्टफोन का इस्तेमाल पढ़ाई नहीं, बल्कि सोशल मीडिया चलाने के लिए करते हैं। जबकि केवल 7 में से 1 ही बच्चा स्मार्टफोन के इस्तेमाल से ऑनलाइन पढ़ाई करता है। रिपोर्ट में पाया गया है कि माता-पिता और अभिभावक बच्चों को 12 से 13 वर्ष की आयु में लैपटॉप और टैबलेट की जगह स्मार्टफोन ज्यादा दिलाते हैं। रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि करीब 72.70 फीसदी अध्यापकों को इससे पहले स्मार्टफोन के इस्तेमाल का एक्सपीरियंस नहीं था। इनमें से करीब 54.1 फीसदी का मानना है कि स्मार्टफोन के क्लासरूम में इस्तेमाल से ध्यान भटकता है।

एक शैक्षिक रिपोर्ट के मुताबिक स्मार्टफोन से बचपन और शैक्षिक जीवन इंटरनेट के जंगल में गुम हो रहा है। पिछले कई सालों से सूचना तकनीक ने जिस तरह से तरक्की की है उसने छात्रों की जीवनशैली को ही बदल डाला है। बच्चे और युवा एक पल भी स्मार्टफोन से खुद को अलग रखना गंवारा नहीं समझते। इनमें हर समय एक तरह का नशा सा सवार रहता है। मौजूदा दौर में बच्चों में खेलकूद और पढ़ाई का स्थान स्मार्टफोन ने ले लिया है। इसका सीधा प्रभाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर पड़ा है। शहरों के साथ अब गांवों में भी मोबाइल की पहुँच होने से बच्चों में इंटरनेट की लत बढ़ गई है। इससे उनमें संवादहीनता का खतरा बढ़ रहा है। बच्चे के ऐसे व्यवहार को अनदेखा करने की जगह इस पर सजग और सावधान होने की जरूरत है।

ब्रिटेन और इटली की यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन पर विश्वास करे तो पाएंगे इंटरनेट का ज्यादा इस्तेमाल करने वाले स्टूडेंट पढ़ाई से तालमेल नहीं बैठा पाने के कारण पिछड़ते जा रहे हैं। ऐसे छात्र अकेले रहना पसंद करते हैं जिससे उनका भविष्य खतरों में पड़ गया है। अपने बच्चों को मोबाइल और कंप्यूटर पर गेम खेलते अनेक माता-पिता बहुत खुश होते हैं। वे दूसरों को बड़े गर्व के साथ यह बताते तनिक भी नहीं हिचकते की उनका बेटा डिजिटल दुनिया के नए जमाने के साथ दौड़ रहा है। वे बड़े खुशी से बताते हैं कि वह मोबाइल पर फोटो निकाल लेता है। मैसेज भेज देता है। व्हाट्सप पर बात कर लेता है और फोटो, वीडियो शेयर कर लेता है। यहाँ तक कि गुगल पर कुछ भी खोज लेता है। लेकिन शायद वह इस बात से अनजान है कि जिसे वह बच्चे की स्मार्टनेस समझ रहे हैं वह उसके विकास में बाधा भी बन सकता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि इलेक्ट्रॉनिक गजेट और कंप्यूटर का अत्यधिक प्रयोग बच्चों के लिए अच्छा नहीं है। इससे उनमें संवादहीनता और चिड़चिड़पन की प्रवृत्ति बढ़ती है।

ब्रिटेन और इटली की यूनिवर्सिटी के संयुक्त अध्ययन में पाया गया कि जो छात्र डिजिटल तकनीक का अधिकतम उपयोग करते हैं, वे पढ़ाई के साथ पूरी तरह नहीं जुड़ पाते और फिसुट्टी साबित होते हैं। ज्यादा इंटरनेट के इस्तेमाल से उन्हें अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता और उनमें अकेलेपन की भावना घर कर जाती है। ब्रिटेन की स्वानसी और इटली की मिलाना यूनिवर्सिटी ने संयुक्त अध्ययन में डिग्री कोर्स में सेहत संबंधी अध्ययन के लिए दुनियाभर की 285 यूनिवर्सिटी के छात्रों से उनके डिजिटल उपयोग, पढ़ाई और रिजल्ट के बारे में जानकारी ली गई थी। अध्ययन में 25 प्रतिशत छात्रों ने बताया कि उन्होंने दिनभर में 4 घंटे ऑनलाइन बिताए जबकि 70 प्रतिशत ने एक से तीन घंटे तक इंटरनेट का इस्तेमाल किया। इनमें 40 प्रतिशत छात्रों ने सोशल नेटवर्किंग का इस्तेमाल किया जबकि 30 प्रतिशत ने सूचना के लिए इसका इस्तेमाल किया। वहीं एक अन्य रिपोर्ट में बताया गया था कि इंटरनेट की लत से छात्र अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने से कतराने लगते हैं और अपने घर के बाहर की दुनिया में रुचि लेना छोड़ देते हैं। इससे उनका शैक्षिक वातावरण भी प्रभावित होता है। एक अभिभावक का कहना है उसका बेटा स्कूल से आते ही स्मार्टफोन थाम लेता है, कई आवाज लगाने पर भी हिलता तक नहीं। बाहर घूमने की जगह उनका बेटा स्मार्टफोन पर व्यस्त रहता है, लेकिन अब उसके व्यवहार पर चिंता होने लगी है। वह किसी से बात करना तक पसंद नहीं करता, ज्यादा कुछ बोलों तो चिढ़ जाता है या चिल्लाकर जवाब देता है। एक दूसरा अभिभावक अपनी बेटी के व्यवहार से चिंतित है। वह कहती है कि अभी आठवीं कक्षा में ही है, लेकिन उसके अंदर इस उम्र के बच्चों सी चपलता और चंचलता नहीं है। काफी कम बोलती है। इंटरनेट सर्फिंग में उसका खाली समय बीतता है।

देश में इंटरनेट के तेजी से बढ़ते इस्तेमाल में बचपन खोता जा रहा है जिसकी परवाह न सरकार को है और न ही समाज इससे चिंतित है। ऐसा लगता है जैसे गैर जरूरी मुद्दे हम पर हावी होते जा रहे हैं और वास्तविक समस्याओं से हम अपना मुँह मोड़ रहे हैं। यदि यह यँ ही चलता रहा तो हम बचपन को बर्बादी की कगार पर पहुँचा देंगे। अभिभावकों को अपनी इस लापरवाही और बच्चों के प्रति उदासीनता का खामियाजा भी भुगतने को तैयार होना पड़ेगा क्योंकि इंटरनेट ज्ञान के साथ अशरूलि सामग्री भी परसोता है जिसका बाल और युवा मन पर विपरीत असर पड़ता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम नए जमाने को अपनाने के साथ उसकी बुराइयों पर भी निगाह रखे ताकि बचपन को गुमराह होने से बचाया जा सके। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया या वीडियो गेम बच्चों को मैनैट की तरह अपनी ओर खींचते हैं। एक बार ये बच्चों के हाथ में गए तो उन्हें इससे दूर करना इम्पॉसिबल हो सकता है। बच्चों का दिमाग उतना डेवलप नहीं हुआ होता है कि वो उस मैनिटिक खिंचाव से खुद को बचा सकें। इसलिए बच्चों को स्मार्टफोन देने में जितनी देरी कर सकें, करें और अगर देना ही पड़े तो पेरेंटल कंट्रोल लगाकर दें।

—अतिथि संपादक,
बाल मुकुंद ओझा
वरिष्ठ लेखक और पत्रकार

श्रीराम भारतीय जनमानस के मूल भाव में रहे हैं और इसी का ही परिणाम है कि आम जीवन और संस्कारों के साथ-साथ अन्य विभिन्न आयाम यथा कला, साहित्य, जो कि सभ्यता को दिशा और पोषण देते हैं, में श्रीराम का सशक्त निरूपण हुआ है। यहाँ श्रीराम केवल धर्म, समुदाय या संप्रदाय के प्रतिनिधि न होकर संस्कार और संस्कृति के पर्याय हैं। भारत ही नहीं बल्कि थाईलैंड, सूरीनाम और मॉरिशस सरीखे देशों में भी श्रीराम का जीवन और आदर्श लोक व्यापक है, प्रासंगिक है और समादृत है। संस्कृत साहित्य की अनुपम कृतियों रघुवंश, प्रसन्न राघव और उत्तर रामचरित में रामकथा का सुन्दर उल्लेख मिलता है। साहित्य के साथ-साथ ललित कलाओं विशेषकर चित्रकला में भी रामायण, श्रीरामचरितमानस और अन्य कृतियों में उल्लेखित रामकथा के प्रसंगों का चित्रण हुआ है। रामायण और रामकथा के प्रसंग लोक चित्रों से लेकर मंदिरों, महलों, हवेलियों के भित्ति-चित्रों, विभिन्न लघुचित्रण शैलियों यथा राजपूत, कांगड़ा, बसोली आदि से लेकर समसामयिक और आधुनिक चित्रकारों के कला-कर्म में मुखरित होते हैं। लोक चित्रांकन परंपरा में श्रीराम जन-व्यापक होकर, मानवीय मूल्यों के सशक्त संवाहक के रूप में उद्घाटित होते हैं। 7वीं और 12वीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु में प्रारम्भ हुआ, भक्ति आंदोलन 15वीं शताब्दी तक उत्तर भारत तक पहुँचा।

भक्ति त्रिविड़ उपजी लाये रामानन्द, प्रकट किया कबीर ने, सात दीप नौ खंड भक्ति के इस प्रचार-प्रसार में चित्रित स्कॉल्स का महत्वपूर्ण प्रयोग रहा, जिसमें मुख्य रूप से हरिकथा के तमिल और तेलुगु परंपराओं को निरूपित करते चित्रित स्कॉल्स को मौखिक आख्यानों के साथ प्रदर्शित किया जाता था। कला इतिहास की दृष्टि से यह मानना तर्कसंगत है कि उस समय पश्चिम बंगाल के पटुआ और पटचित्र स्कॉल्स या आंध्र प्रदेश की कलमकारी परंपराओं जैसे लोक और आदिवासी चित्रकला भी प्रचलन में थी और रामायण के दृश्य

और रामकथा के विविध प्रसंगों के दृश्य उकेरे जा रहे थे। रामायण के कई संस्करण और रामकथा के प्रसंग, भारतीय जनजातियों जैसे भील, मुंडा, संथाल, गोंड, मीणा, सीरा, कोर्कस, राभा, बोडो-कछारी, खासी, मिज़ोस, मैतेई आदि के बीच लोक-व्यापक हैं। विषय की संरचना और एकता को बनाए रखते हुए, ये समुदाय ग्रंथों और कलाओं में अपने स्वयं के कथानक और उप-कथानक गढ़ते हैं, और सामाजिक-सांस्कृतिक-भौगोलिक परिदृश्य जोड़ देते हैं, जो हो सकता है कि मूल ग्रंथ में न हो। प्रत्येक समूह कला के माध्यम से रामायण या रामकथा के अपने संस्करण को प्रस्तुत करता है। मिथिला चित्रकला या मधुबनी चित्रकला का उद्भव मधुवन (शहद के जंगल), बिहार से हुआ है और लोक मान्यता अनुसार, श्रीराम और सीता जी की पहली मूललाकात यहीं हुई और मिथिला के राजा और सीता जी के पिता जनक ने राम-सीता विवाह के लिए पहल की दीवारों को बाँस, आम और कमल की झाड़ियों और पक्षियों, मछलियों और सर्पों के चित्रों से चित्रित कराया था। आज भी इस क्षेत्र में विवाह अवसरों पर घरों में मधुबनी चित्रकला परंपरा के चित्र इस भाव से बनाये जाते हैं कि, प्रत्येक दुल्हा राम और उसकी पत्नी सीता है। मिथिला की सभी बेटियाँ सीता हैं और अवध, जहाँ के राम हैं, के लोग मिथिलावासियों के भाई हैं।

राजस्थान की लोक चित्रांकन परंपरा में भी रामायण और रामकथा प्रसंगों के विषयों पर अथाह चित्र बने हैं और जिन्हें चित्रकथाओं के माध्यम से गेय रूप में सुनाए जाने की परंपरा रही है। कपड़े से बनी फड़ और लकड़ी से बनी कावड़, राजस्थान की विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा की प्रतिनिधि विधाएँ हैं। फड़ में कपड़े पर मूल रंगों जैसे हिरमिच, हिंगुल, पेवडी आदि से किसी कथानक के विविध विषयों को लघु चित्रशैली में चित्रित किया जाता है। शाहपुरा, भीलवाड़ा का जोशी परिवार फड़ बनाने की कला में बहुत माहिर है और इस परिवार ने इस परंपरा को संभाल रखा है। "हालाँकि हम अलग-अलग विषयों पर फड़ बनाते हैं, लेकिन रामदला की फड़ (श्रीराम का समूह) एक महत्वपूर्ण

और श्रीरामचरितमानस के प्रसंगों पर केन्द्रित उनकी फड़ बहुत प्रसिद्ध हुई हैं। यह कला-संस्कार उन्हें अपने पिता पद्मश्री अलंकृत स्व. श्रीलाल जोशी से विरसे में मिले, जिन्होंने लुप्त-प्रायः फड़ चित्रण को सहेजा और संभाला। राजस्थान के भोपा (पुरुष पुजारी) फड़ चित्रों को माध्यम के रूप में इस्तेमाल करके रामायण के प्रसंग गाते हैं (फड़-बाचन), जहाँ भोपी (पुजारी की पत्नी) सुनाए जाने वाले प्रसंग पर नृत्य करती हैं, और चूँकि माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, इस संदर्भ में गुजराती लोक गायिका स्व. दीवालीबेन भील का योगदान उल्लेखनीय है। यह सत्य और तथ्य है कि सम्पूर्ण भारत की लोक और जनजातीय कला

परम्पराओं में श्रीराम प्रमुख विषय हैं, हालाँकि कुछ लोक चित्रों में रामायण या रामकथा के अन्य चरित्र भी मुखरित रूप से प्रस्तुत किये गए हैं। "हम गोंड कलाकारों के लिए प्रमुख देवता श्रीराम के भाई लक्ष्मण जी हैं और मान्यतानुसार लक्ष्मण जी शेषनाग के अवतार हैं, और हम गोंड कलाकार नागवंशी हैं इसलिए नागों के उपसक है। गोंडी रामायण में लक्ष्मण जी को सम्मर्पित सात प्रसंग हैं, जिन्हें गोंड कलाकार पौराणिक रूप से चित्रित करते हैं, और अपने गायन प्रवचनों के दौरान उपयोग करते हैं।

पारंपरिक रूप से चित्रों के विषय गोंडी रामायण के प्रसंग होते हैं, और वर्तमान में इनमें समसामयिक तत्वों जैसे पश्चिमी परिधान आदि का समावेश किया जा रहा है" वैकट रमन सिंह श्याम, पाटनगढ़ जिला डिंडोरी, मध्य प्रदेश। महाराष्ट्र की वरली लोक चित्रांकन परंपरा में कलाकार, अपने कुल-देवता, महादेव जी और गणेश जी को अधिक प्राथमिकता देते हैं, लेकिन एक नवविवाहित जोड़े को अपने मिलन को सामाजिक रूप से स्वीकृति दिलाने के लिए आयोजित समारोह में वर को :राम राम; कहकर ही रसम पूरी करने की अनुमति दी जाती है।

वर्तमान में यह लोक चित्रकला परम्पराएँ बाजार और अर्थव्यवस्था के सापेक्ष बदल रही हैं, जो उन्हें बचाए रखने के लिए जरूरी भी है। उदाहरण के लिए मधुबनी चित्र दीवारों पर न बनकर केनवास पर आ रहे हैं और फड़ लम्बी न होकर छोटे संस्करण बॉल हैंडिंग्स के रूप में चित्रित हो रही हैं। कलाकार अब कावड़ का उपयोग पोर्टेबल आर्ट गैलरी के रूप में कर रहे हैं। लेकिन कहीं न कहीं विषय पौराणिक-धार्मिक विशेषकर रामकथा प्रसंग ही हैं, चाहे समसामयिक मूल्यों के समावेश के साथ ही क्यों नहीं। इन लुप्त-प्रायः लोक चित्रकलाओं को एक नए आर्थिक-सामाजिक नैरेटिव द्वारा पुनर्जीवित किया जा रहा है, जो इन कलाओं का दायरा बढ़ायेगा।

लेखक विशिष्टता कला एवं सुरास्त्र विशेषज्ञ हैं! –अब्दुल लतीफ़ उस्ता

लोक चित्रारामों में श्रीराम



श्रीराम दरबार की फड़, चित्रकार-कल्याण जोशी, भीलवाड़ा फड़ है, जिसमें श्रीराम, श्री कृष्ण और विष्णु जी के प्रसंग चित्रित होते हैं। फड़ चित्रण शुरू करने से पहले, हम लोक देवता पाबूजी, या भगवान विष्णु के अवतार देवनारायण जी का ध्यान करते हैं, इन दिनों राम दरबार की फड़ को बाजार में बड़ी माँग है।" कल्याण जोशी।

भीलवाड़ा के कल्याण जोशी पिछले तीस सालों से फड़ बना रहे हैं



श्रीराम पर केंद्रित कावड़, शिल्पी श्री द्वारका प्रसाद सुथार, बस्सी चितौड़गढ़

और श्रीरामचरितमानस के प्रसंगों पर केन्द्रित उनकी फड़ बहुत प्रसिद्ध हुई हैं। यह कला-संस्कार उन्हें अपने पिता पद्मश्री अलंकृत स्व. श्रीलाल जोशी से विरसे में मिले, जिन्होंने लुप्त-प्रायः फड़ चित्रण को सहेजा और संभाला। राजस्थान के भोपा (पुरुष पुजारी) फड़ चित्रों को माध्यम के रूप में इस्तेमाल करके रामायण के प्रसंग गाते हैं (फड़-बाचन), जहाँ भोपी (पुजारी की पत्नी) सुनाए जाने वाले प्रसंग पर नृत्य करती हैं, और चूँकि माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, इस संदर्भ में गुजराती लोक गायिका स्व. दीवालीबेन भील का योगदान उल्लेखनीय है। यह सत्य और तथ्य है कि सम्पूर्ण भारत की लोक और जनजातीय कला

जमीन धंसने से बने गड्ढे की जयपुर की भारतीय भू-सर्वेक्षण विभाग की टीम करेगी जांच

गत 15 अप्रैल की रात को सहजरासर गांव के नजदीक रोही में खेत में जमीन धंस गई थी

लूणकरणसर, (निसं)। तहसील के ग्राम सहजरासर में अचानक जमीन धंसने से बने गड्ढे की जांच के लिए अब जयपुर के झालाना इंजीनीरिंग भारतीय भू-सर्वेक्षण की टीम आएगी। सोमवार को जमीन धंसने से बने गड्ढे के घटना स्थल का उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्र कुमार व राजस्व तहसीलदार बाबूलाल ने दौरा कर जायचा लिया। मौके पर पुलिस अधिकारियों की सुरक्षा को देखते हुए लोगों की आवाजाही को लेकर सख्ती से निपटने के निर्देश दिए। वहीं धारा 144 तोड़ने

वाले लोगों के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए गए। प्रशासन ने लोगों को जमीन धंसने से बने गड्ढे से दूर रहने की हिदायत दी। वहीं सुरक्षा के लिए पुलिस के जवानों का पहरा भी तैनात है। उपखण्ड अधिकारी ने बताया कि मामले की जांच के लिए भारतीय भू-सर्वेक्षण विभाग की टीम के अधिकारियों ने मंगलवार शाम तक पहुंचने की बात कही है तथा जांच होने के बाद ही जमीन धंसने का कारण स्पष्ट हो पाएगा। जमीन धंसने के एक सप्ताह बाद

■ जमीन धंसने से बने गड्ढे के घटना स्थल का एसडीएम व राजस्व तहसीलदार ने जायजा लिया, मौके पर पुलिस अधिकारियों को सुरक्षा को देखते हुए लोगों की आवाजाही को लेकर सख्ती से निपटने के निर्देश दिए

अब गड्ढे के बढ़ने व गहरा होने जैसी ख़ास हल-चल नजर नहीं आ रही है। जमीन धंसने से आस-पास कई मीटर तक बड़ी-बड़ी दारों आ चुकी है तथा सख्ती भी टूट चुकी है। गौरतलब है कि 15 अप्रैल की रात को ढाणी

भोपालाराम से सहजरासर गांव जाने वाली सड़क पर सहजरासर गांव के नजदीक रोही में एक खेत में अचानक जमीन धंस गई थी। जमीन धंसने से 150 से 200 फीट लम्बा-चौड़ा तथा 70-80 फीट

गहरा गड्ढा हो गया। इसके अलावा सड़क समेत आस-पास के इलाके में बड़ी-बड़ी दरारें बन गईं। इससे आस-पास के इलाके में कौतूहल की स्थिति बनी है। जमीन धंसने से बने गड्ढे को लेकर खान एवं भू-विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों ने मौके पर पहुंचकर जांच की, लेकिन कोई निष्कर्ष पर बात नहीं पहुंची। वैज्ञानिकों ने जीसीटी रोही में एक खेत में अचानक जमीन धंस गया था। इसको लेकर उपखण्ड प्रशासन ने भी जिला कलेक्टर को लिखा गया था।

कलेक्टर की आईडी का दुरुपयोग कर निजी सहायक ने आर्म्स लाइसेंस बनाया

एडीएम ने तत्कालीन कलेक्टर के निजी सहायक सहित पांच कार्मिकों के विरुद्ध मामला दर्ज कराया

खैरथल, (निसं)। नवगठित जिला खैरथल तिजारा के अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुरेंद्र सिंह यादव ने सहायक प्रशासनिक अधिकारी नरेंद्र चौधरी सहित पांच लोगों के विरुद्ध खैरथल पुलिस थाने पर कलेक्टर की आईडी का दुरुपयोग कर आर्म्स अनुज्ञापत्र जनरेट करने का मामला दर्ज कराया है। यह कार्रवाई पूर्व विधायक रामहेत यादव की शिकायत पर विशिष्ट शासन सचिव के आदेश पर गठित जांच समिति की जांच में दोषी पाए जाने पर की गई है।

नवगठित जिला खैरथल तिजारा के अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुरेंद्र सिंह यादव ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया कि किशानगढ़ बास पूर्व विधायक रामहेत यादव की और से

■ यह कार्रवाई पूर्व विधायक रामहेत की शिकायत पर विशिष्ट शासन सचिव के आदेश पर गठित जांच समिति की जांच में दोषी पाए जाने पर की गई

मुख्यमंत्री की शिकायत भेजी गई थी। मुख्यमंत्री को भेजी गई शिकायत पर विशिष्ट शासन सचिव ने गत 11 मार्च को जांच के आदेश किए थे। जांच में सामने आया कि तत्कालीन जिला कलेक्टर के निजी सहायक नरेंद्र चौधरी ने जिला कलेक्टर की आईडी का दुरुपयोग कर आर्म्स अनुज्ञापत्र जनरेट किया है। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने जांच में सामने आने पर नरेंद्र चौधरी सहायक प्रशासनिक अधिकारी सहायक जितेंद्र शर्मा अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी नरेश चंद्र शर्मा कनिष्ठ सहायक सहित पांच

ने अतिरिक्त जिला कलेक्टर की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया है। पुलिस में मामला दर्ज होने के पश्चात कलेक्ट्रेट कार्यालय में कार्मिकों के बीच चर्चा बढ़ी है। मामले की जांच खैरथल थाना अधिकारी दिनेश कुमार कर रहे हैं। पूर्व विधायक रामहेत यादव ने मुख्यमंत्री को लिखित शिकायत में अवगत कराया कि जिला कलेक्टर के निजी सहायक नरेंद्र चौधरी ने कोप्रिस प्रत्याशी के पक्ष में प्रचार किया तथा पद का दुरुपयोग करते हुए नियमों का उल्लंघन कर आर्म्स अनुज्ञा पत्र जारी किया है। पूर्व विधायक ने आरोप लगाया कि नरेंद्र चौधरी को कोप्रिस सरकार में राजनीतिक दबाव में तत्कालीन रहे जिला कलेक्टर ने निजी सहायक के पद पर लगाया था।

पेयजल समस्या को लेकर प्रदर्शन

रावतभाटा, (निसं)। रावतभाटा क्षेत्र के वार्ड नंबर 12 और 39 में फिर से पेयजल समस्या गहरा गई है। समस्या को लेकर वार्ड की महिलाएं चिलचिलाती धूप में दोपहर दो बजे जलदाय विभाग पहुंची। महिलाओं का कहना है कि पिछले कई दिनों से पेयजल समस्या से जूझ रही हैं। नलों में पीने का पानी तक नसीब नहीं होता। इधर बढ़ती गर्मी के साथ पानी की आपूर्ति नहीं होने से महिलाओं में रोष है। पानी की समस्या को लेकर महिलाओं ने जलदाय विभाग में ज्ञापन देकर समस्या के समाधान की मांग की। नगर की महिलाओं का कहना है कि रावतभाटा में चंबल नदी का अपार सागर है। ऐसे में हमेशा ही पानी की किल्लत रहती है। जलदाय विभाग के अभियंता अविनाश वामा ने बताया कि महिलाओं ने समस्या समाधान का प्रार्थना पत्र दिया है। उक्त क्षेत्र में निरक्षण कर कारणों का पता करेंगे। हम सभी क्षेत्र में बचकर पानी देते हैं। मगर कुछ वार्ड में लोग सप्लाई के दौरान मोटर चला देते हैं। ऐसे में बिजली विभाग को पत्र देकर सप्लाई के समय बिजली कटौती कराई जाएगी।



राशिफल

गुरूवार 25 अप्रैल, 2024

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत् 2081, विशाखा नक्षत्र रात्रि 2:24 तक, व्यतिपात योग रात्रि 4:53 तक, कीलव करण प्रातः 6:46 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 8:01 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

प्रह रिथिति: सूर्य-मेघ, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-मेघ, शुक-मेघ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज सर्वोर्ध सिद्धि योग रात्रि 2:24 से आरम्भ होगा। बुध मार्गी सांघ 6:25 पर होगा। आज व्यतिपात पुण्य है और आज प्रतिपदा तिथि में वृद्धि हुई है। श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:34 तक, चर 10:48 से 12:25 तक, लाभ-अमृत 12:25 से 3:39 तक, शुभ 5:15 से सूर्यास्त तक। राहुकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:57, सूर्यास्त 6:52

मेघ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा। धार्मिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सम्पत्ति आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्रार्थमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रतासुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मिथुन
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैयन्यता के कारण परेशानी हो सकती है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रतासुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नौकरपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक विवादों का निपटारा हो सकता है।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक कार्यों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। शुभ कार्यों में व्ययधान सामने आ सकते हैं। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है।